हिन्दी के शिक्षण और प्रचार-प्रसार में कंप्यूटर की भूमिका

डॉ. सुमन देवी
सहायक प्रोफसर, हिन्दी, संत मोहन सिंह खालसा
लबाना गर्ल्ज़ कॉलेज बराड़ा (अम्बाला)

आज के युग विज्ञान और तकनीक का है, जिसमें हम पग-पग पर तकनीक से टकराते हैं। जो लोग इस तकनीक को अपनार लेते हैं, वह अपने काम आसानी से कर लेते हैं और जो नहीं कर पाते या जिन्हें इसके लिए दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है, वह अपना काम जैसे-तैसे पूरा कर लेते हैं। जो इस झंझट में नहीं पढ़ना चाहते, वह समय के साथ चलने वाली स्पर्धा से पिछड़ जाते हैं और भविष्य में भी उनके मन में विचार आता है कि यदि वह समय की मांग को समझकर तकनीक के साथ चल पढ़ते तो वह आज वहाँ होते जहाँ उनके साथी खड़े हैं। इसका एक साधारण सा उदाहरण है कि आजकल कंप्यूटर द्वारा आसानी से रेल का टिकट बुक किया जा सकता है, कंप्यूटर पर रेल विभाग की ऑनलाइन साइट पर जाकर मिनटों में रेल का कन्फर्म टिकट प्राप्त किया जा सकता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि तकनीक और कंप्यूटर ने हमारे कई काम आसान कर दिए हैं। भारत की सरकार भी आजकल डिजिटल इंडिया का सपना देख रही है। ऐसी स्थिति में क्यों न सूचना प्रौद्योगिकी का भरपूर लाभ उठाया जाए और इसीके माध्यम से हमारी राजभाषा हिन्दी के विकास के लक्ष्य को भी साधा जाए? आजकल कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करना बहुत आसान हो गया है, खासकर गुगल हिन्दी इनपूट और माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंगवेज टूल की सहायता से अंग्रेजी की लेआउट के जरिए अंग्रेजी को ही गति से हिन्दी में भी कंप्यूटर पर आसानी से काम किया जा सकता है। ऐसे में हम एक ऑनलाइन 'चौपाल' लगाकर हमारे विचारों को हमारी ही भाषा में स्थान दे सकते हैं। गुगल का ब्लॉगर एक ऐसा ही ई-टूॅल है, जिसके जरिए हम हमारे विचारों को इंद्रजाल इंटरनेट के जरिए जन-जन तक पहुँचा सकते हैं। विकिपीडिया के अनुसार चिट्ठा (अंग्रेजी का ब्लॉग), बहुवचन चिट्ठे (अंग्रेजी में ब्लॉग्स) एक प्रकार के व्यक्तिगत जालपृष्ठ (वेबसाइट) होते हैं। जिन्हें दैनन्दिनी (डायरी) की तरह लिखा जाता है। हिन्दी के प्रचार और प्रसार में यह चिट्ठे (ब्लॉग) हमारे इलेक्ट्रॉनिक 'देवदूत' साबित हो सकते हैं, जो कलियुग में नारद मुनि का काम कर सकते हैं। यदि आप अपने विचारों को पूरे विश्व में साथ पहुँचाना चाहते हैं, तो आप अपने पंसदीदा विषय पर ब्लॉग बनाकर अपनी बातों को पूरे विश्व में कहीं भी पहुँचा सकते हैं और उसे रोज अद्यतन भी कर सकते हैं।

आजकल हम देखते हैं कंप्यूटर पर कई ब्लॉग हैं, जो हिंदी में हैं और नव-नवीन विषयों पर ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं। इसमें हिंदी भाषा, ज्ञान-विज्ञान, तकनीक-प्रौद्योगिकी, कथा, कहानियाँ, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल जगत ओर अन्य विषयों के साथ इतिहास भूगोल और भौतिक विज्ञान जैसे कई विषयों का समावेश है। विशेष: अनुनाद सिंह जी ने इस क्षेत्र में भगीरथ प्रयास किया है। कंप्यूटर पर ऐसे कई विषयों पर आज जानकारी उपलब्ध हो गई जिन विषयों की पुस्तकें प्राय: दुलर्भ समझी जाती हैं। प्राचीन ग्रंथों के पीडीएफ फाइलों का ब्लागों के माध्यम से आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है। इससे अध्ययन और अनुसंधान दोनों में सहायता हो रही है। खासकर ऐसी पुस्तकें जिनकी प्रतियां आज किसी लाईब्रेरी में भी मिलना मुश्किल है ऐसे कई विषयों की पुस्तकों का संकलन आसानी से उपलब्ध हो जाता है। साथ ही ब्लॉग बनाने वाले व्यक्ति के विचार और दर्शन से भी परिचित हो सकते हैं। हिंदी में लिखी गई बहुत सी पुस्तकें आज भी आम जन तक नहीं पहुँच पाई हैं। जिन्हें ब्लॉग पर दी गई लिंक के माध्यम से सरलता से डाउनलोड किया जा सकता है। सोशल मीडिया पर शेयर किया जा सकता है। और अपने पाठकों को इसकी लिंक भी भेजी जा सकती है। विकिपीडिया के अनुसार हिंदी का पहला चिट्ठा 'नौ दो ग्यारह' माना जाता है। जिसे अलोक कुमार ने पोस्ट किया था। ब्लॉग के लिए चिट्ठा शब्द भी उन्हीं दो

ISBN: 978-81-954645-0-0

प्रदिपादित किया था जोकि अब इंटरनेट पर इसके लिए प्रचिलत हो चुका है। चिट्ठा बनाने के कई तरीके होते हैं। जिनको सबसे सरल तरीका है, किसी अंतजलि पर किसी चिट्ठा वेबसाइट जैसे बलॉगस्पाट या लाइव जर्नल या वर्डप्रेस आदि जैसे स्थलों में से किसी एक पर खाता खोल कर लिखना शुरू करना। एक अन्य प्रकार की चिट्ठेकारी सूक्षम चिट्ठाकारी कहलाती है। इसमें अति लघु आकार के पोस्ट्स होते हैं। आज के संगणक जगत में चिट्ठों का भारी चलन चल पड़ा है। कई प्रसिद्ध मशहूर हस्तियों के चिट्ठा लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं। और उन पर अपने विचार भी भेजते हैं। चिट्ठों पर लोग अपने पसंद के विषयों पर लिखते हैं। और कई चिट्ठे विश्व भर में मशहूर होते हैं। जिनका हवाला कई नीति-निर्धारण मुद्दों में किया जाता है। चिट्ठा का आरम्भ 1992 में लांच की गई पहली जालस्थल के साथ ही हो गया था। आगे चलकर 1990 के दशक के अंतिम वर्ष में जाकर चिट्ठे ने जोर पकड़ा। आरंभिक चिट्ठा संगणक जगत संबंधी मूलभूत जानकारी के थे। लेकिन बाद में कई विषयों के चिट्ठा सामने आने लगे। वर्तमान समय में लेखन का हल्का सा भी शौक रखने वाला व्यक्ति अपना एक चिट्ठा बना सकता है। चूंकि यह नि:शुल्क होता है और अपना लिखा पूरे-विश्व के सामने तक पहुंचा सकता है। चिट्ठों पर राजनीतिक विचार, उत्पादों के विज्ञापन, शोधपत्र और शिक्षा का आदान-प्रदान भी किया जाता है। कई लोग चिट्ठों पर अपने शिकायतें भी दर्ज करके दूसरों को भेजते हैं। इन शिकायतों में दबी-छुपी भाषा से लेकर बेहद कर्कश भाषा तक प्रयोग की जाती है। वर्ष 2004 में चिट्ठा को मेरियम वेबस्टर में आधिकारिक तौर पर सम्मिलित किया गया था। कई लोग अब चिट्ठों के माध्यम से ही एक दूसरे से संपर्क में रहने लगे हैं। इस प्रकार एक तरह से चिट्ठाकारी अब विश्व के साथ-साथ निजी संपर्क में रहने का माध्यम भी बन गया है। कई कंपनियों आपके चिट्ठों की सेवाओं को अत्यंत सरल बनाने के लिए कई सुविधाएं देने लग गई हैं।

हिंदी के प्रचार को इन ब्लॉग ने पंख लगा लिए हैं। खासकर ऐसी पुस्तकें जिनको प्रकाशित करने में समस्या आती है या फिर जो पुस्तकें प्रकाशित होने पर भी पाठकों तक नहीं पहुँच पाती हैं, ऐसी पुस्तकों की सामग्री को आसानी से पाठकों तक मात्र एक क्लिक करने पर ही पहुँचाया जा सकता है, जिस पर पाठक बैठे-बैठे ही अपनी प्रतिक्रिया भी दे सकते हैं। ऐसे कई ब्लॉग हैं। जिनका यहाँ जिक्र करना आवश्यक है, जैसे हिंदू महासागर, राजभाषा हिंदी, प्रतिभास, विज्ञानविश्व, शब्दों का सफर, ज्ञानवाणी गणित और विज्ञान, सौर, इंडिया वाटर पोर्टल, भारत विद्या, वैज्ञानिक भारत, विचार वाटिका आदि विशेष हैं। किसी ने कहा भी है, कि ''आज का ब्लॉग कल की पुस्तक है।'' अर्थात् कागज कलम लेकर अपने विचारों को लिखने की बजाए यदि आप उसे सीधे कंप्यूटर पर टाइप कर पाते हैं तो वह विचारों की इलेक्ट्रानिक पांडुलिपि बन जाती है। अनुनाद सिंह जी का 'प्रतिभास' ब्लॉग मुझे बहुत अच्छा लगा। इनके द्वारा बनाया गया भारत का वैज्ञानिक चिंतन, नवाचार दर्पण, अनागत विद्या, कालजयी भारत का इतिहास, हिंदी विश्वकोश, प्रतिबिंब, अक्षरग्राम, रचनाकार, हिंदी विकिपिडिया ब्लॉग, भारत का वैज्ञानिक तथा नवाचार दर्पण ने हिंदी का मनोरंजकता से ज्ञानरंजकता की ओर मोड़ दिया है। टेढी दुनिया पर रवि रतलामी की तिर्थक, तकनीक रेखाएँ खींचने वाले के 'छींटें और बौछारों' ब्लॉग ने तकनीकि को भाषा के साथ जोड़ने का अद्भूत प्रयास किया है। भारतीय संस्कृति ब्लॉग ने भारतीय संस्कृति की ध्वजा को विश्व में फहराने का काम किया है। भारत संस्कृति के सुनहरे पहलुओं का विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने का यह एक सफल प्रयास माना जा सकता है।

हिंखोज, आइना हिंदी ब्लॉग, देवाशीष कृत 'नुक्ताचीनी' के जरिए राजनीति, सामाजिक स्थितियों, तकनीकी जानकारी जैसे विभिन्न मुद्दों को छूने वाले लेखों को पढ़ा जा सकता है। डॉ. जाकिर अली रजनीश जी ने अपनी वैज्ञानिक सोच को 'विज्ञनविश्व' के माध्यम से व्यक्त किया है। जो विज्ञान में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए एक अनोखा तोहफा साबित हुआ है।

रवीन्द्र प्रभात ने अपनी 'हिन्दी ब्लॉगिंग का इतिहास' पुस्तक में बताया है कि आवश्यकता, उपयोगिता, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दुनिया से सैकण्डों में अपनी बात के जरिए जुड़ने वालों की बढ़ती संख्या को देखते हुए आज ब्लॉगिंग जैसे द्रतगामी संचार माध्यम को पांचवां स्तम्भ माना जाने लगा है। कोई इसे वैकल्पिक मीडिया तो कोई न्यू मीडिया की संज्ञा से

नवाजने लगा है। हालांकि यह ब्लॉग आलोचना की एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। जिसमें हिंदी ब्लॉगिंग के दस वर्षों के इतिहास को सहेजा गया है तथा कालक्रम को विशेषताओं के साथ उल्लिखित किया हैं इस पुस्तक में ई-एजुकेशन, ई-पत्रकारिता, मल्टीमीडिया, शिक्षा केंद्रित सोशल नेटवर्किंग आदि की भी चर्चा हुई है। हिन्दी में ब्लॉग लेखन में महिलाओं की स्थिति की समीक्षा है। जो हिंदी भाषा साहित्य में ब्लागिंग को स्थिति निर्धारण पर विचारोन्तेजक टीका भी है। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हिंदी समय ब्लॉग के माध्यम से हिंदी की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसमें हिंदी के उपन्यास कहानी, कविता, नाटक, निबंध, कोश विज्ञान, रचनाकारों, लेखकों, अनुसंधान संबंधी नवीनतम जानकारी प्राप्त होती है। इससे अध्ययन के साथ अनुसंधान को भी दिशा मिल रही है। वैदिक विज्ञान जिसे सामान्य व्यक्ति मात्र कल्पना की उड़ान माना है, इन ब्लाग के माध्यम से इस विषय पर शोध करने वालों को एक नहीं उम्मीद की किरण दिखाई देने लगी है। निश्चित ही राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को हिंदी ब्लॉगर एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

ISBN: 978-81-954645-0-0